

RV. PAṬ. 17, 25. मुखतःकृत्य, मुखतः कृत्वा, मुखतःकारम् P. 3, 4, 61, Sch.  
 2. मुखतम् (मुख + तम् nom. ag.) adj. = मुखे तस्यति P. 3, 4, 61, Sch.  
 मुखर्तीय (von 1. मुखतम्) adj. am Munde —, vorn befindlich gaṇa  
 गृहादि zu P. 4, 2, 138. KĀr. 2 zu P. 4, 3, 60. — Vgl. पार्श्वतीय.  
 मुखद्वयं (मुख + द्वय) adj. bis an den Mund reichend ÇAT. BR. 9, 1, 1,  
 13. 13, 8, 2, 11.  
 मूखद्वेषण (मुख + द्वे) m. Zwiebel RĀĠAN. im ÇKDR.  
 मुखद्वेषिका (मुख + द्वे) f. das Gesicht verunstaltender Ausschlag bei  
 jungen Leuten BHĀVAPR. im ÇKDR. ÇĀRṅG. SAṂH. 1, 7, 65. — Vgl. यौ-  
 वनापिडका.  
 मुखधौता (मुख + धौ) f. Clerodendrum Siphonanthus R. Br. ÇABDAĀ.  
 im ÇKDR.  
 मुखनिरीतक (मुख + नि) adj. träge, faul (die Gesichter betrachtend)  
 ÇABDAR. im ÇKDR.  
 मुखनिवासिनी (मुख + नि) f. die im Munde Wohnende, Bein. der  
 SARASVATI ÇABDĀRTHAK. bei WILSON.  
 मुखपट (मुख + पट) m. Schleier MEGH. 63. — Vgl. वक्त्रापट.  
 मुखपाक (मुख + 2. पाक) m. Entzündung des Mundes SUÇR. 1, 309, 3.  
 156, 4. ÇĀRṅG. SAṂH. 1, 7, 80, 108.  
 मुखपिण्ड (मुख + पि) ein in den Mund gesteckter Bissen Spr. 748.  
 मुखपूरण (मुख + पू) n. ein Mundvoll Wasser u. s. w. HĀR. 206.  
 HALĀJ. 4, 100.  
 मुखप्रिय (मुख + प्रिय) 1) adj. im Munde angenehm SUÇR. 1, 190, 7. —  
 2) m. Orange BHĀVAPR. im ÇKDR.  
 मुखबन्धन (मुख + ब) n. 1) Deckel AK. 1, 2, 2, 26. H. 1092. — 2) Ein-  
 leitung, Vorwort KHANDOM. im ÇKDR.  
 मुखभूषण (मुख + भू) n. Schmuck des Mundes oder Gesichts: 1) Be-  
 tel ÇABDĀRTHAK. bei WILSON. — 2) Zinn (!) H. Ç. 160.  
 मुखभेद (मुख + भेद) m. das Verziehen des Gesichts MBH. 9, 2786.  
 मुखमण्डनक (मुख + मण्डन) m. ein best. Baum, = तिलक RĀĠAN.  
 im ÇKDR.  
 मुखमण्डल (मुख + म) n. Gesicht VAJTP. 99.  
 मुखमण्डिका (मुख + मण्ड) f. eine best. Krankheit und die Genie der-  
 selben SUÇR. 2, 392, 2. 16. दैत्यानां वा दितिर्माता तामाङ्गुर्मुखमण्डिकाम् ।  
 श्रुत्यर्थं शिप्रुमांसेन संप्रकृष्टा डुरासदा ॥ MBH. 3, 44483. मण्डनिका  
 ÇĀRṅG. SAṂH. 1, 7, 109. Verz. d. Oxf. H. 307, b, 27. मण्डि unter den  
 Müttern Skanda's HARIV. 9342.  
 मुखमण्डनिका s. u. मुखमण्डिका.  
 मुखमाधुर्य (मुख + मा) n. eine best. Schleimkrankheit ÇĀRṅG. SAṂH.  
 1, 7, 72.  
 मुखमोद (मुख + मोद) m. Hyperanthera Moringa Vahl. RĀĠAN. im ÇKDR.  
 मुखपच (मुखम्, acc. von मुख, + पच) m. Bettler HĀR. 38.  
 मुखप्लवा (मुख + प) n. Gebiss am Pferdezaum H. 1230.  
 मुखरं (von मुख) P. 5, 2, 107, VĀrt. 1. KĀÇ. zu P. 4, 1, 79. 1) adj. f. घ्रा  
 geschwätzig, = डुर्मुख AK. 3, 1, 36. H. 351. HALĀJ. 2, 222. = तुपिडल  
 UśĀVAL. zu URĀDIS. 1, 55. (विज्ञे): एका भार्या (सरस्वती) प्रकृतिमुखरा  
 Spr. 543. मूर्खमुखरैः PRAB. 106, 13. अति Spr. 4733. von Vögeln und  
 Bienen: नानामुखरद्विजालिपरिगीत KATHĀS. 71, 70. 99. von klingenden

Schmucksachen: नूपुराणि MRĀKĪH. 13, 3. MĀLAV. 52. मृङ्गल RAGH. 5, 72.  
 पत्नेन प्रतिपादिता मुखर्योर्मञ्जीर्योर्मकता SĀH. D. 47, 4. वाचं परं चरण-  
 पञ्जरतित्तिरीणां ब्रह्मन्नद्वयमुखरो प्रणवाम तुभ्यम् BHĀG. P. 5, 2, 10. ANI  
 Ende eines comp. beredt in, sich auslassend in, sich ergießend in, er-  
 haltend von: इत्युत्पन्नविकल्पजल्पमुखरैः — जनैः Spr. 889. अतिमुखर-  
 सीमा करिकथा 4103. लब्धाभीष्टस्तुतिमुखरवैतालिकरवः KATHĀS. 44, 185.  
 मुरदानवखिचेषु पुण्याद्वेषमुखरेषु 30, 206. इत्याद्याक्रन्दमुखराः पौराः  
 72, 178. अन्तेपद्मनातरमुखरमुखान् Spr. 1434. अतिमुखरमुखान् 2701. स्तु-  
 तिमुखरमुखाम्नी KATHĀS. 2, 81. धिक्कारमुखरतामैर्वदनैः 43, 394. अर्चणमुखरा  
 गिरः in Vorwürfen sich ergießend RĀĠA-TAR. 6, 144. तोयोत्सर्गस्तनित  
 (मेघ) MEGH. 38. पुष्पकचन्द्रशालाः तपां प्रतिश्रुमुखराः करोति RAGH. 13,  
 40. लताकुञ्जे गुञ्जन्मधुव्रतमण्डलीमुखरशिखरे Git. 2, 1. 11, 20. DHŪRTAS.  
 in LA. 69, 5. PRAB. 79, 15. गोदावरीमुखरकन्दर UTARARĀMA. 12, 4. ÇĀTR.  
 1, 41. PRAB. 79, 11. Vgl. उन्मुखर, मौखर्य. — 2) m. a) Krähe. — b) Mu-  
 schel RĀĠAN. im ÇKDR. — c) Anführer, Rädelführer Spr. 1364. — d)  
 N. pr. α) eines Schlangendämons MBH. 3, 3632. — β) eines Schelmen  
 Verz. d. Oxf. H. 139, a, 19. — 3) f. ई Gebiss am Pferdezaum Schol. zu  
 KĀTJ. ÇR. 14, 3, 9. — Vgl. मौखर, मौखरि.  
 मुखरक (von मुखर) 1) m. N. pr. eines Schelmen KATHĀS. 73, 75. — 2)  
 f. मुखरिका a) = मुखरी Gebiss am Pferdezaum Schol. zu KĀTJ. ÇR. 16,  
 2, 4. — b) Gerede, Geschwätz: मुललितमुखरिकामतु BHĀG. P. 5, 23, 7.  
 मुखरता (wie eben) f. Geschwätzigkeit, Schwatzhaftigkeit Spr. 934.  
 KIR. 3, 16.  
 मुखर्य (wie eben), यति ertönen machen: स्वर्गे किं वैष क्वं मुख-  
 रयति दिशो इन्द्रभीनां विनादः NĀGĀN. 34, 9. मुखर्य मणिरसनागुणामनु-  
 गुणाकण्डनिनादम् Git. 12, 7. मुखरितरसन 7, 16. मुखरितमणिरसनी 11,  
 3. संचरदधरमुधामधुरधनिमुखरितमोक्तवेष 2, 2. आकार्य तन्मुखरिताखि-  
 लदिग्भवागम् KATHĀS. 16, 121. तस्मिन्महन्मुखरिता मधुभिन्नरित्रपोष-  
 शेषसरितः परितः स्रवन्ति BHĀG. P. 4, 29, 40. मुखरितमाशीर्मङ्गलैरङ्गना-  
 नाम् — रात्रधाम RĀĠA-TAR. 3, 482. MĀLATI. 1, 7. PAÑĀR. 3, 3, 2.  
 मुखराग (मुख + राग) m. Gesichtsfarbe RAGH. 12, 8. तच्छुल्लैवाविभिन्ने  
 मुखरागेण KATHĀS. 33, 8.  
 मुखरीकर (मुखर + 1. कर) ertönen machen: कृतदिशुवा (कीर्ति)  
 KATHĀS. 19, 111.  
 मुखरुज् (मुख + रुज्) f. Mundkrankheit VARĀH. BRH. S. 3, 82.  
 मुखरोग (मुख + रोग) m. dass. SUÇR. 1, 302, 7. 2, 123, 4. Verz. d. B. H.  
 No. 934. 996. Verz. d. Oxf. H. 308, b, 9. 10. 314, a, 40. 357, a, 2 v. u. VA-  
 RĀH. BRH. S. 3, 83. 6, 4. MĀRK. P. 13, 35. Davon adj. रोगिक auf die  
 Mundkrankheit bezüglich SUÇR. 1, 9, 5. रोगिन् mundkrank 19.  
 मुखलाङ्गल (मुख + ला) adj. Schwein (den Mund als Pflug gebrau-  
 chend) GĀṬĀDH. im ÇKDR. .  
 मुखलेप (मुख + लेप) m. 1) das Bestreichen des Mundes und zugleich  
 der oberen Seite einer Trommel Spr. 748. — 2) eine best. Schleimkrank-  
 heit ÇĀRṅG. SAṂH. 1, 7, 72; vgl. घ्रास्योपलेप SUÇR. 2, 233, 7.  
 मुखवत् (von मुख) adj. mit einem Munde versehen MAITRĪJUP. 6, 5.  
 मुखवल्गु (मुख + व) m. Granatbaum ÇABDAM. im ÇKDR.  
 मुखवाटिका (मुख + वा) f. eine best. Pflanze, = अम्बुष्ठा RĀĠAN. im ÇKDR.  
 मुखवाद्य (मुख + वा) n. 1) Blasinstrument TRIK. 1, 1, 123. — 2) eine